पाठ 6. मैंने पक्षी उड़ा दिए

पाठ का उद्देश्य
प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम जगाना है। इस पाठ द्वारा बच्चे जान पाएँगे कि पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं और उनका जीवन पिंजरे में लटकना नहीं बल्कि आसमान में स्वच्छंद उड़ना है।

पाठ का सारांश
जब लेखक की उम्र आठ-नौ वर्ष की थी तो उन्हें पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। पतंगों के साथ-साथ उड़ते हुए पक्षी उन्हें खूब भाते। उन दिनों लोगों को पक्षी पालने का बड़ा शौक था। लेखक को पिंजरे में कैद चीखते-चिल्लाते पक्षी देखकर बड़ा दुख होता था। लेखक द्वारा मना करने पर भी उनकी मँझली भाभी चार चिड़ियाँ और एक पिंजरा खरीदकर ले आईं। चिड़ियाँ पिंजरे में तड़पती रहती थीं। लेखक यह सब देखकर उदास हो गए। एक दिन अवसर मिलने पर लेखक ने सभी पक्षियों को आज़ाद कर दिया। लेखक की भाभी ने जब खाली पिंजरा देखा तो बहुत गुस्सा हुईं और लेखक को खूब डाँटा। परंतु लेखक को इस बात की खुशी थी कि उन्होंने पक्षियों को आज़ाद कर दिया।

अध्यापन संकेत
पाठ वाचन से पूर्व पाठ की संक्षिप्त पृष्ठभूमि तैयार करते हुए **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्न बच्चों से करवाएँ। बच्चों से पक्षियों के बारे में चर्चा करें। उनसे पूछें, उन्हें पिंजरे में बंद पक्षी अच्छे लगते हैं या आसमान में उड़ते? पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को पाठ का मूल भाव समझाएँ। यह पाठ रबींद्रनाथ टैगोर के बचपन से जुड़ा है। बच्चों को उनके बारे में बताएँ कि हमारा राष्ट्रीय गान 'जन-गण-मन' रबींद्रनाथ टैगोर ने ही लिखा है। बच्चों से पूछिए तथा बताइए–

- क्या पक्षियों को पिंजरों में बंद करना चाहिए?
- क्या आपने कभी किसी पक्षी को किसी के घर में लटके पिंजरे में देखा है?
- पाठ में बालक ने पक्षियों को पिंजरे में से उड़ा दिया। अगर आप उसकी जगह होते तो क्या आप भी ऐसा ही करते या भाभी की डाँट के डर से पक्षियों को पिंजरे में ही रहने देते?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।